

---

# Dadhichiprotam Ambikamahimopadesham 1

---

## दधीचिप्रोक्तं अम्बिकामहिमोपदेशम् १

---

### Document Information

Text title : Dadhichiprotam Ambikamahimopadesham 1

File name : ambikAmahimopadesham1dadhIchiproktaM.itx

Category : devii, shivarahasya, upadesha, advice, devI

Location : doc\_devii

Transliterated by : Ruma Dewan

Proofread by : Ruma Dewan

Description/comments : shrIshivarahasyam | ugrAkhyah saptamAMshaH | adhyAyaH 14 | 282-292||

Latest update : May 3, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

May 3, 2024

*sanskritdocuments.org*

---

दधीचिप्रोक्तं अम्बिकामहिमोपदेशम् १



दक्षप्रति दधीच्युवाच -  
इयमेवाद्य कल्याणी शङ्करार्धाङ्गभागिनी ।  
इयमेवार्चिता नित्यं सर्वसौभाग्यदायिनी ॥ २८२ ॥  
इयमेवार्चिता नित्यं सर्वोपद्रवहारिणी ।  
इयमेवार्चिता नित्यं सर्वमङ्गलदायिनी ॥ २८३ ॥  
इयमेवार्चिता नित्यं कीर्तिसम्पत्प्रदायिनी ।  
इयमेवार्चिता नित्यं भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी ॥ २८४ ॥  
इयमेव जगद्धात्री जगद्भक्षणकारिणी ।  
इयमेव हि कल्यान्ते जगत्संहारकारिणी ॥ २८५ ॥  
इयमेव हि कल्याणी विष्णुमायाविलासिनी ।  
इयमेवेन्द्रवह्न्यर्कब्रह्मादिजननी स्मृता ॥ २८६ ॥  
इयमेव तपोधर्मदानादिफलदायिनी ।  
इयमेव हि वेदोक्तसर्वकर्मफलप्रदा ॥ २८७ ॥  
इयमेव स्तुता सर्वैर्वदान्तैरखिलैरपि ।  
इयमेव स्तुता सर्वैरितिहासादिभिः सदा ॥ २८८ ॥  
तप्यते हि तपः सिद्धैरेतद्दर्शनकाङ्क्षिभिः ।  
पूज्यते योगिभिर्योगैरेतद्दर्शनकाङ्क्षिभिः ॥ २८९ ॥  
धर्माः क्रियन्ते मुनिभिरेतद्दर्शनकाङ्क्षिभिः ।  
इज्यन्ते यज्वभिर्योगैरेतद्दर्शनकाङ्क्षिभिः ॥ २९० ॥  
अनन्तदानधर्माणां शाङ्करीदर्शनं फलम् ।  
यागादीनां च धर्माणां शाङ्करीदर्शनं फलम् ॥ २९१ ॥  
इयमेव जगन्माता सर्वविद्यास्वरूपिणी ।

इयमेवादिविद्येयं सर्वमङ्गलरूपिणी ॥ २९२ ॥

॥ इति शिवरहस्यान्तर्गते दधीचिप्रोक्तं अम्बिकामहिमोपदेशं १ सम्पूर्णम् ॥

- ॥ श्रीशिवरहस्यम् उग्रारख्यः सप्तमांशः । अध्यायः १४ । २८२-२९२ ॥

- .. shrIshivarahasyam ugrAkhyaH saptamAMshaH . adhyAyaH 14 . 282-292

..

Notes:


Ṛṣi Dadhīci ऋषि दधीचि renders Upadeśa उपदेश to Dakṣa दक्ष about the Stature of Ambikā अम्बिका who has arrived at the site of the Yajña यज्ञ when Dakṣa दक्ष chooses to not welcome Her.

Encoded and proofread by Ruma Dewan

---

——  
*Dadhichiproktam Ambikamahimopadesham 1*

pdf was typeset on May 3, 2024

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

